अध्याय IV

प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण

4.1 भूमिका

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण

अध्याय IV

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका –

संख्यात्मक प्रदत्तों का एकत्रीकरण, संगठित विश्लेषण एवं व्याख्या गणितीय प्रविधियों द्वारा करने की क्रिया को सांख्यिकी कहा जाता है। संशोधन द्वारा हमें संख्यात्मक प्रदत्त प्राप्त होते हैं। अतः मापन एवं मूल्यांकन के लिये सांख्यिकीय को मुख्य साधन माना जाता है। संख्यात्मक प्रदत्तों का स्पष्टीकरण मुख्य साधन माना जाता है। संख्यात्मक प्रदत्तो का स्पष्टीकरण करने हेतु सांख्यिकीय शब्द का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न व्यक्तिगत निरीक्षणों द्वारा समूह व्यवहार अथवा समूह गुणधर्मो का स्पष्टीकरण करके उनका सामान्वीकरण सांख्यिकीय द्वारा किया जाता है।

सांख्यिकीय विधियां, विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण के मुख्य उद्देश्य को पूरा करती है। सांख्यिकीय का उपयोग हम प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर उनसे परिणाम प्राप्त करने हेतु करते हैं।

विश्लेषित अभ्यास करके उससे परिणाम प्राप्त कर प्रदत्तों की व्याख्या करना शोध का एक प्रमुख हिस्सा होता है। यह अध्ययन का एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि इससे प्रदत्तों का सही उपयोग किया जाता है। व्याख्या के द्वारा हम एकत्रित प्रदत्तों का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में कर सकते हैं। सांख्यिकीय तथ्यों को अपने आप में कोई उपयुक्तता नहीं।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रदत्तों का विश्लेषण परिकल्पनाओं के अनुसार है।

परिकल्पना:–1

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।

उपयुक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शोधकर्ता ने संबंधित साहित्य एवं स्वयं के अनुभव से जाना कि पहले कई कार्यो में लिंग–भेद आधारित कार्यो का विभाजन होता था। आज इसमें बदलाव आ रहा है। इसके आधार पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में भी बदलाव आ रहा है कि नहीं यह जानने के लिए शोधकर्ता ने लिंग–भेद संबंधित कार्य–विभाजित चित्र एवं बंध प्रश्नावली की रचना की चित्र को दिखाकर लिंग–भेद आधार पर कार्य–विभाजन संबंधित विद्यार्थियों का दृष्टिकोण जानने हेतु बंद प्रश्नावली दी गई। प्रश्नावली में अधिकतम अंक 132 रखे गये। इसमें से विद्यार्थियों ने प्राप्त किये हुये अंको का विश्लेषण करके कितने प्रतिशत विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में बदलाव आया यह जानने के लिए निम्न रूप में वर्ग अंतराल एवं स्तंभाकृति का उपयोग करके प्राप्त परिणामों को दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.1

लिग–भेद कार्य–विभाजन परीक्षण के प्राप्तांक आवृत्ति एवं प्रतिशत को वर्ग अंतराल में प्रदर्शित किया है।

क्रम	प्राप्तांक	आवृत्ति	प्रतिशत
1	71–80	2	1.70%
2	81–90	11	9.40%
3	91–100	33	28.21%
4	101–110	57	48.72%
5	111–120	14	11.97%
		17	100%

तालिका क्रमांक 4.2.1

लिग–भेद कार्य–विभाजन परीक्षण के प्राप्तांक एवं आवृत्ति को निम्न स्थभांकृति आकृति द्वारा प्रदर्शित किया है।

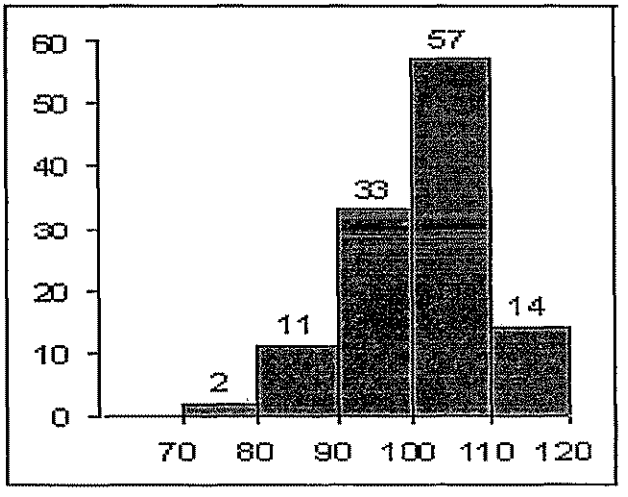

विधान– 1 में 2 विद्यार्थियों ने 71 से 80 स्कोर के अंदर अंक प्राप्त किये जो 1.71 प्रतिशत है इससे यह ज्ञात होता है कि 1.71 प्रतिशत विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण बहुत ही कम बदलाव पाया गया है।

विधान–2 में 11 विद्यार्थियों ने 81 से 90 स्कोर के अंदर अंक प्राप्त किये जो 9.40 प्रतिशत है इससे यह ज्ञात होता है कि 9.40 प्रतिशत विद्यार्थियों छात्रों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।

विधान–3 में 33 विद्यार्थियों ने 91–100 स्कोर के अंदर अंक प्राप्त किये जो 28.21 प्रतिशत है, इससे यह ज्ञात होता है कि 28.21 प्रतिशत विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण बदलाव देखा जाता है।

विधान –4 में 57 विद्यार्थियों ने 101 से 110 स्कोर के अंदर अंक प्राप्त किये जो 28.72 प्रतिशत है इससे यह ज्ञात होता है कि 48.72 प्रतिशत विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव ज्यादा पाया गया है।

विधान–5 में 14 विद्यार्थियों ने 111 से 120 स्कोर के अंदर अंक प्राप्त किये जो 11.97 प्रतिशत है इससे यह ज्ञात होता है कि 11.97 प्रतिशत विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव चरमसीमा तक पाया गया है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधित दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।

परिकल्पना–2

कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया।

तालिका क्रमांक 4.2.2 :– कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के मध्यमान, मानक विचलन एवं ज प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t
लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन	छात्र	59	101.13	8.27	175	1.37
	छात्राऐं	58	103.22	8.16		

तालिका द्वारा 0.05 स्तर पर 't' मूल्य = 1.98

कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं के लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन के 't' प्राप्तांक 1.37 है। यह मूल्य 't' तालिका के 0.05 स्तर के मूल्य से कम है। इसलिये 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष –

कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना–3

कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया।

तालिका क्रमांक 4.2.3 :– कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में लिंग–भेद कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'ज' प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

चर	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t
लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन	ग्रामीण	58	97.83	8.94	115	6.39
	शहरी	59	106.27	4.65		

तालिका द्वारा

0.01 स्तर पर 't' मूल्य = 2.59

कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के लैगिंक कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोंण के 't' प्राप्तांक का मूल्य 6.39 है। यह मूल्य 't'

तालिका के 0.01 स्तर के मूल्य से ज्यादा है। इसलिये 't' प्राप्तांक 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः प्राप्त 't' मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष –

कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग-भेद पर आधारित कार्य-विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।